रात्रि क्लास 9-4-68 ओमशान्ति "शिव बाबा और वर्सा या है?"

***

सहज याद है। वेहद का बाप जो कि टीचर बनते हैं उनको तो बहुत याद करना चाहिए ना। याद करते हैं उसमें माया के विघ्न पड़ते हैं। माया कोई को छोड़ेगी नहीं। देखना है हम ने बाप की याद में हर्षित हो खाना खाया। आशुक को माशुक मिला तो खुशी होगी ना। तुम्हारा जमा होता जावेगा। बाबा को तो खुशी होती है। वह बाबा सर्च-लाईट देते हैं। यह भी जैसे वह बन जाते हैं। जैसे कि एक हो जाते हैं। इसमें मुंझने की कोई बात नहीं। तुम जितना याद करते जाते हो जमा होता जाता है।

****

मंजिल बहुत बड़ी है। तुम क्या से क्या बनते हो। 84 जन्म भी लेनी पड़ती है। फर्स्ट क्लास अवस्था को जाये पाना है बच्चों को। तुम बहुत ही समझदार बनते हो। पहले तो बेसमझ थे। बाप कहते हैं साधू-सन्त आदि-मुनि आद सभी बेसमझ बेअकल हैं। छसा बेवकूफ हैं। तुम कितने समझदार बनते हो। एमआबजेक्ट कितना फर्स्टक्लास है। हम बाबा को याद करते हैं पुरानी खाल उतर नई चढ़ जावेगी। कर्मातीत अवस्था को पावेंगे फिर यह छोड़ देंगे। बहुत कुछ तुमको समझना है। साक्षात्कार भी हो सकता है। नजदीक आने से घर आद याद आते हैं अपने शहर की। बाबा की नालेज बड़ी मीठी है। भगवान बैठ पढ़ाते हैं। रथ में पढ़ाते हैं। वह है भक्ति। फिर भी होंगी। बच्चे आते हैं बहुत खुश होकर जावेंगे। यहां तुम नई बातें सुनते हो। भक्ति-मार्ग में भी मनुष्यों को बड़ा मजा आता है। शास्त्र आद पढ़ने में। है कुछ भी नहीं। हर बात में पुरुषार्थ तो करना ही होता है। भक्ति मार्ग में पुरुषार्थ करते करते गिरते ही जाते हैं। यहां तुम चढ़ते जाते हो। चढ़ती कला सर्व का भला है ना। तुम कोई नईबात नहीं सुनते हो। अनेक बार तुम ने सुनी है वही सुनते रहते हो। कोई भी सुनते हैं समझ में आ जाता है। सुनते रहेंगे गद-गद होते रहेंगे।

तुम हो अन-नोनवारियर्स। और बहुत वेरी वेल-नोन। देवियों की पूजा क्यों होती है तुम सारे विश्व को हेविन बनाते हो। तो करने वाले और कराने दोनों की ही महिमा होती है। यहां तुम बहुत कमाई कर सकते हो। वायुमंडल शुध रहता है। घर में थोड़े ही ऐसा वायुमंडल बन सकता है। इसलिए सन्यासी भी घर चले जाते हैं। तुम बच्चियां थोड़े ही जावेंगी। परन्तु आजकल माताएं भी सन्यासियों में कनवर्ट हो जाती हैं। बच्चों को मालूम है आदी सनातन धर्म वाले जरूर आवेंगे, सेपलिंग लगावेंगे। सेपलिंग का रिवाज अभी पड़ा है

तुम अपने आप को तिलक लगाते हो। जो अच्छी रीत पढ़ते हैं वह अपने को स्कालरशिप लायक बनाते हैं। अच्छा मीठे2 बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट और नमस्ते।

रात्रिक्लास 10-4-68 ओम् शान्ति तुम हो रूहानी स्वदर्शनचक्रधारी ब्राह्मण कुलभूषण। और सर्वोत्तम श्रेष्ठ कुल।

****

जैसे अग्रवाल कुल आद होते हैं ना। ब्राह्मण कुल देवताओं से भी ऊंच है। क्योंकि बच्चों को बाप पढ़ाते हैं। ईश्वर के बने हो उन से वर्सा लेने लिए। ईश्वर वर्सा देते हैं विश्व की बादशाही। और यह तो बच्चों को समझाया गया है धर्म जो स्थापन होती है पहले कुल होते हैं फिर डिनायस्टी। क्राईस्ट बुध, इब्राहीम आद जो भी बड़े2 हैं उनको प्रिसेप्टर(गुरु) नहीं कहा जाता है। तो यह सन्यासी उदासी तीर्थी टे2मठ,-पंथ डास्टाटारियां आद हैं। उनको भी गुरु नहीं कहेंगे। वह है भक्ति मार्ग वाले गुरु। सदगति दे न सकें। ऐसे भी नहीं कि वह दुर्गति देते हैं। उनको मालूम नहीं पड़ता है। यह है ईश्वरीय सम्प्रदाय के सदगुरु, वह है रावण सम्प्रदाय के गुरु। तुम सच्चा रास्ता बताते हो। वह है झूठा रास्ता। बाप पूछते हैं तुमको सदगति देकर गया फिर दुर्गति किसने दी? 5 विकार। रावण। बाप कहते हैं मैं ने शिवालय बनाया फिर वेश्यालय किसने बनाया? श्रीमत पर तुम भी सदगति वाले ठहरे। तो सच्चा सदगुरु एक ही निराकार है। बाबा कहने से वर्से की खुशबूएं आती हैं। शिव को हमेशा बाबा ही कहा जाता है, बाप कहते हैं अच्छी सुनते हो कानों से। यह नालेज है ना। नालेज में एनआवनेट चाहिए। वह यह (ल0ना0) दिखाई जाती है। कोई कहे एम0 करेंगे। यह कोई कराता नहीं। ड्रामा में नूंध है। आटोमेटिकली हो जाता है। बाप सम0 कराते नहीं। जैसे भक्ति मार्ग का भी समझाया नवधा भक्ति करते

हैं तो भावना का फल मिलता है। ईश्वरफल नहीं देता। ईश्वर सदगति देते हैं। वहसदगति मिलती है पढ़ाईसे न किसा० सें। एमआबजेक्ट तो है। बहुत बच्चों की दिल होती है सा० करने। भगवान कहते हैंमैं सा० नहींकराता। मैं रास्ता बताता हूं पतित से पावन होने का। सा० से फायदा तो है नहीं। मैं वह रास्ता बताता हूं जिससे कल्याण हो फायदा हो। तुम ने कब आत्मा का सा० किया जो बाप का करने चाहते हो। आत्मा खुद को ही नहीं जानती। शिव बाबा सा० वह तो शास्त्रों में है अखण्ड ज्योति है। बिन्दी का सा० करेंगे कैसे। समझ में ही नहीं आवेगा। मैं तो एक बार आता हूं आकर रास्ता बताता हूं। तुम ऐसे पवित्र बन बिश्व के मालिक बन सकते हो। बाकी सा० से कुछ नहीं होता। समझो सा० करते रहेंगेफायदा कुछ भी नहीं। हो सकता हैउसमें माया की प्रवेशता हो जाये। इसलिए कब भी सा० का खयाल नहीं करना है। यह तो स्कूल है. ना। है ही सत्य नारायण की कथा। वह सभी हैं झूठी कथाएं। यह तो नालेज है। नालेज को कथानहीं। नालेज तोसमझा दी जाती है। टीचर बैठ पढ़ाते हैं। चक्र का राज सुनाते हैं। और आत्माजो अपवित्र बनी हैइसकके लिए कहते हैं मुझे याद करो। तुम्हारी आत्मा पवित्र हो जावेगी। आत्मा भी बिन्दी बहुत सूक्ष्म है। इन आंखों से देख न सकेंगे। सा० से विकर्म विनाश होंगे। योग से विकर्म विनाश होना है। सा० की कब भी दिल रखो नहीं। वह भी भक्तिमार्ग की ड्रामा में नूंध है। मनोकामना पूरी होती है। बाकी फायदा कुछ भी नहीं है। पढ़ाई से फ्यादा होती है। पढ़ाई ही टाईम लेती है सा० तो सेकण्ड का काम है। मूल बात है आत्मा को सतोप्रधान कैसे बनावें। बाप कहते हैंमुझे याद करो तो जंक निकल जावेगी। जन्म-जन्मान्तर के पाप कट जावेंगे। तुम घर जाकर फिर पहले2 स्वर्ग में आ जावेंगे। सतोप्रधान भी बनना है। दैवी गुण भी धारण करना है। रोज देखो कोई कोदुःख तो नहीं दिया। मैं बाबा कोयाद करता हूं। कोईअवज्ञा तो नहीं हुई। सभी तरफसे बुधि योग हटाये मामेकं याद करो। तुम्हारे विकर्म विनाश हो जावेंगे। इसमें सा० आद की प्रश्न ही नहीं उठता। पढ़ाई और याद है मुख्य। ऐसी पढ़ाई में अपसेन्ट न रखना चाहिए। पढ़ाई कहां भी पहूंचाई जाती है। विलायत में भी मुरली जाती है ना। चक्र का राज़ और बाप की याद। बस। नालेज मिलती रहेगी। सुहय2 पायन्ट्स मिलती रहेंगी। मुरली रोज पढ़नी चाहिए। जो अपसेन्ट न हो। यह है पवित्र पढ़ाई। पवित्र भी होना है पढ़ाई भी पढ़नी है। देवताओं के आगे आश ले जाते हैं। यहां आश ले आने की दरकार ही नहीं। तुको पता ही नहीं भगवान से क्या मिलेगा। भगवान आपे ही सभी कुछ देते हैं। बच्चों को सब बताते हैं। अन्दर में जो बात होगी आपे ही रेसपाण्ड मिल जावेगी। बाबा से कहेंगे धंधे में यह बात है बाप कहते हैं मैं इन ब्र बातों को नहीं जानताहूं। हमारे रथ ने ही वह धंधा छोड़ दिया। यह पढ़ाईअच्छी लगी जिससे बादशाही मिलती है। बाकी और कोई सतसंग है नहीं। वह तो लतसंग है। सीढ़ी उतरनी ही है। ऊपर को ई जा न सके। दिन प्रति दिन उतरती कला होती जाती है। नई दुनिया पुरानी होती जाती है। बाकी सा० आद सभी भक्ति मार्ग के हैं। जिस रूप में देखा हुआ होगा वही साक्ष होगा। तो बाप कहते हैं तुमको इतना अकीचार धन दिया फिर क्या किया? तुमको मालूम है? कितना सालवेन्ट बनाया। कुबेर का खजाना था। हीरों के महल थे। ड्रामा अनुसार उतरे ही आये हैं। भारत सालवेन्ट था ना। अभी यह गरीब बन गये हैं। वह शाहुकार हो गये। फिर रिटर्न वहां सेलेते हैं। फिर हिसाब किताब चुकुत हो जावेगा। यह खेल है समझने का। और मेहनत भी है। इच्छा मात्रम। अविद्या। बापआपे ही आकर स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। एमआबजेक्ट सामने है। बाप आकर पढ़ाते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। जितना निश्चयबुधि होकर पुरुषार्थ करेंगे। संशय× संशय बुधि विनश्यन्ति, निश्चय बुधि ब्र विजयन्ति। पूरा निश्चय हो तो खुशी का पारा चढ़े। यह बेहद का ड्रामा है। तुम ऐसे एक्टर्स हो। सतयुग में बहुत थोड़े एक्टर्स होते हैं। एक भारत खण्ड ही था। फिर आदी सनातन देवी देवता धर्म फिर स्थापन होरहा है। यह ड्रामा को अच्छी तरह समझना है। विशाल बुधि चाहिए। बुलाते ही हो आकर पावन बनने का रास्ता बताओ। बाप कहते हैं मैं जब आता हूं तो सभी को मुक्ति जीवनमुक्ति देता हूं। क्राईस्ट आया। वह किसको ज्ञान देंगे जो ॐ गुरु कहें। यह है

पुरूषोत्तम संगम युग। अच्छा बच्चों को फिर सवेरे उठना है। यह अच्छा है। कट उतरती जावेंगी। इसमें एकान्त बड़ी अच्छी चाहिए। सन्यासी भी गोरखधंधे से निकल जाते हैं। तुमको सन्यास नहीं करना नहीं है। जैसे पवित्र आये थे वैसे ही पवित्र बन जाना है। अन्त मते सो गति हो जायेगी। पिछाड़ी में हिसाब किताब सारा निकलता है। स्कालरशिप बहुतथोड़े लेते हैं। बच्चों को याद में स्वदर्शनचक्रधारी बनना है। बाप सिर्फ सिखलाते हैं ऐसे बनेंगे। दुनिया भी इस चक्र कोनहीं जानती हैं। तुम बापको और रचना के आदि मध्य अन्त को जानते हो। अच्छा बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

रात्रिक्लास 11-4-68 : बाप बच्चों से पूछते हैं यह है स्प्रीचुअल ईश्वरीय युनिवर्सिटी। इसमें बच्चों को क्या मिलता है? बताओ दो अक्षर में। (मुक्ति और जीवनमुक्ति) यहराईट है। सुख और शान्ति। यहां है दुःख। शान्ति सुख और दुःख यह चक्र तोसमझ लिया है। शान्ति के लिए रड़ियां मारते रहते हैं। हीरोहीरोईन का पार्ट तुमही बजाते हो। तुम्हारा नाम सभी से बाला है जिसको कोई नहीं जानते। बाप आकर ब्रहमा कुमार,कुमारियों को पढ़ाते हैं। जिससे शान्ति और सुख मिलता है। विश्व में शान्ति और सुख अभी ही मिलता है। बाप ही आकर स्वर्ग की स्थापनाकरते हैं। तुम स्वर्ग हेविन के मालिक बन रहे हो। और सहज कितना है। बाप का बननेसे। बाप काबनने से यह पद मिलता है। अभीप्रश्न क्या पूछेंगे। बाप को जानने से वर्सा को जान लेते हैं। बाकी जानने का कुछ रहता नहीं। ड्रामा को भी समझ जाते हैं। एक्ट बिलकुल एक्युरेट चलता है। त्योहार सभी संगम युग की महिमा है। बेहद के बाप जो एक्टिविटी करते हैं उनकी त्योहार मनाई जाती है। शक्ति अनराईटियस बनाते हैं। बाप रामराईटस बनाते हैं। बच्चों की बुद्धि में है बाबा हमको उल्टा सुल्टा बनाते हैं। रावणराज्य में उल्टा बन जाते हैं। पुजारी बन पड़ते हैं। तुम जो कुछ करते हो राईट करते हो। सभी को बतलाना चाहिए शिव बाबा सम्मुख कहते हैं। शिवजयन्ति तो है ना। शिव बाबा आते हैं। अवतार लेते हैं। स्वर्ग स्थापन करेंगे। नर्क का विनाश भी जरूर करेंगे। तुम जो स्थापना करते हो फिर पालना भी जरूर करेंगे। तुम हो अन-नोन वारियर्स। वह वैरी वैल नोन। बाप कहते हैं मेरे को कहते ही हो ज्ञान का सागर। बाकी है भक्ति। दिल में आता है बाबा से हम स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। बाबा बाबा भीसमझते हैं बच्चे स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। वह है हद की बात यह है बेहद की बात। तुम हद और बेहद दोनों को ही जानते हो। दूसरे सिर्फ हद को जानते हैं। बेहद को जानते ही नहीं। अनुभव भीयही सुनावेंगे हम बाप के बच्चे हैं बाप से बेहद का वर्सा लेने। हर 5000 वर्ष बाद फिर आकर तुम अपना अपना वर्सा लेंगे। फिर सीढ़ी उतरेंगे। फिर चढ़ेंगे। आना और जाना। सीढ़ी उतरना और चढ़ना।

बच्चे कहां मुंजते हैं तो पूछ सकते हैं। परन्तु मुंजने की कोई बात ही नहीं। हर बात में पुरूषार्थ जरूर होता है। इस समय की पुरूषार्थ ही हमारीप्रारब्ध अविनाशी बन जाती है। वहां है ही सुख यहां है दुःखधाम। शान्तिधाम सुखधाम और दुःखधाम। यह तुम चक्र लगाते रहते हो। बच्चों को यह अनुभव बताना चाहिए बाप की मुरली सम्मुख सुनने से क्या फायदा होता है। यहां गोल्ड धंधा आदि तो है नहीं। घर में जाने से फिर वह रिफ्रेशमेन्ट ठंडी हो जाती है। सात रोज की शदठी यहां हैं। कोई भी सिटिंग की बात ही नहीं। इसलिए बच्चे आते हैं रिफ्रेशहोने। अच्छा बच्चों को गुडनाईट। और नमस्ते।

बाप-दादा के हस्ते महावाक्य:-

सभी सर्विस एबुल बच्चों को न सिर्फ बच्चों को बल्कि स्टुडन्टस को रूहानी बाप दादा का याद प्यार बाद समाचार कि बच्चे खूब समझते हैं कि पावन देवी गुणों सहित बेहद के बाप से बेहद का वर्सा पा रहे हैं श्रीमत पर। अभी स्टुडन्ट को पढ़ना है सो तो जहां भी बच्चे हों मुरली मिलती है [illegible] आदि धारण करना है। अभी कोई कहे देवी गुण नहीं धारण कर सकते हैं, शराब कबाब खाने बिगड़ रहे नहीं रुक सकते हैं तो जरूर समझना है कि बहुत कम पदप्रजा जन्म जन्मान्तर लिए है। बड़ा घाटा पहुंचता है। व्यापारी जो हानि बड़ा घाटा सहे तो पूरा अनाड़ी समझा जाता है। खुद भी समझ सकते हैं अच्छी कमाई 21 जन्म की बन रही है। बाकी झूठी कमाई विनाश हुये कि खत्म हुये। अच्छा बच्चों से विदाई।